PROF. (DR.) RAM CHET CHAUDHARY

Prof. (Dr.) Ram Chet Chaudhary is an internationally recognized agricultural scientist. He is a retiree from the Food and Agriculture Organization of the United Nations (FAO) and is currently the Chairman of Participatory Rural Development Foundation (PRDF), Gorakhpur (U. P.). He founded PRDF to devote his knowledge and experiences for the welfare of the society in India, and started working for it.

2. Born on 8th November 1944, Prof. (Dr.) Chaudhary received his B. Sc. Ag degree from the Deen Dayal Upadhyay, Gorakhpur University in 1963, M. Sc. Ag. in 1965 from then Government Agriculture College, Kanpur, and Ph. D. in Agricultural Botany from Agra University. His Ph.D. thesis work was completed at CSIR – National Botanical Research Institute, Lucknow. He received his Post Doctorate from Technical University, Munich Germany.

3. After receiving his Ph. D. Degree in 1969, Prof. (Dr.) Chaudhary served as Assistant Professor in G.B. Pant University of Agriculture & Technology, Pantnagar, Associate Professor in Plant Breeding Department, and Associate Director of Crops research Centre. After that he served as Chief Scientist, Rice Director in Dr. Rajendra Prasad Central Agricultural University, Pusa (Bihar). That followed the glorious journey as Rice Specialist in the World Bank in Nigeria followed by 10 years as Plant Breeder and INGER Global Coordinator of International Rice Research Institute (IRRI) for 10 years. The last formal job of Dr. Chaudhary was with the FAO in various countries of Asia, Middle East and Africa. By that he contributed greatly for the welfare of mankind for the food and health to more than 40 countries of the world.

4. Prof. (Dr.) Chaudhary contributed for the mankind through sharing the knowledge, skill and technology for agriculture and food production including organic and natural crop production. Through his more than 390 publications including 58 books and bulletins, he shared his knowledge and wisdom with students, scientists and farmers alike. His ICAR award winning books in Plant Breeding are the Text books in Agricultural Universities. His 244 research papers have been published in national and international journals. Currently he is on the advisory board of several universities. DDU University Gorakhpur has put him as Mentor of the Institute of Agriculture and natural Sciences, and also instituted "Dr. Ram Chet Chaudhary Gold Medal" for the top PG student in agriculture. He is the member of 17 National and International Scientific Societies.

5. Prof. (Dr.) Chaudhary has received 57 national and international Medals, Awards and Honours from India and other countries of the world. He has developed 150 rice varieties which are cultivated in the world. Out of these, 21 are cultivated in India. His award winning research and development is on Kalanamak rice, which was at the vege of extinction. This heritage rice is now exported and has tripled farmer's income. He safeguarded Kalanamak rice by registering it under PPV & FRA of Government of India and also got Geographical Indication until 2030 in 11 districts of U. P. He is also helping farmers in producing certified Organic Kalanamak rice.

प्रो. (डॉ.) राम चेत चौधरी

प्रो. (डॉ.) राम चेत चौधरी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कृषि वैज्ञानिक हैं। वह संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) से सेवानिवृत्त हुए हैं और वर्तमान में पार्टिसिपेटरी रूरल डेवलपमेंट फाउंडेशन (पीआरडीएफ), गोरखपुर (यू.पी.) के अध्यक्ष हैं। उन्होंने भारत में समाज कल्याण के प्रति अपने ज्ञान और अनुभव को समर्पित करने के लिए पीआरडीएफ की स्थापना की और इसके लिए काम करना शुरू किया।

2. 8 नवंबर 1944 को जन्मे, प्रो. (डॉ.) चौधरी ने 1963 में दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय से बी.एससी. कृषि, 1965 में तत्कालीन राजकीय कृषि महाविद्यालय, कानपुर से एम.एससी. कृषि और आगरा विश्वविद्यालय से कृषि वनस्पति विज्ञान में पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की। उनका पीएच.डी. शोधपत्र का कार्य सीएसआईआर–राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में पूरा हुआ। उन्होंने टेक्निकल यूनिवर्सिटी, म्यूनिख, जर्मनी से पोस्ट डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की।

3. 1969 में अपनी पीएच.डी. डिग्री प्राप्त करने के बाद, प्रो. (डॉ.) चौधरी ने जी.बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में सहायक प्रोफेसर, पादप प्रजनन विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर और फसल अनुसंधान केंद्र के एसोसिएट निदेशक के रूप में कार्य किया। उसके बाद उन्होंने डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (बिहार) में मुख्य वैज्ञानिक, चावल निदेशक के रूप में कार्य किया। इसके बाद उन्होंने नाइजीरिया में विश्व बैंक के अंतर्गत चावल विशेषज्ञ के रूप में प्रशंसनीय कार्य किया, जिसके बाद 10 वर्षों तक प्लांट ब्रीडर और 10 वर्षों तक अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (आईआरआरआई) के आईएनजीईआर वैश्विक समन्वयक के रूप में कार्य किया। डॉ. चौधरी ने अंतिम औपचारिक नौकरी एशिया, मध्य पूर्व और अफ्रीका के विभिन्न देशों के एफएओ में की। इसके द्वारा उन्होंने विश्व के 40 से अधिक देशों में खाद्य और स्वास्थ्य के संबंध में मानव कल्याण के प्रति अपना विपुल योगदान दिया।

4. प्रो. (डॉ.) चौधरी ने जैविक और प्राकृतिक फसल पैदावार सहित कृषि और खाद्य उत्पादन के लिए ज्ञान, कौशल और प्रौद्योगिकी को साझा करके मानव जाति के लिए योगदान दिया। 58 पुस्तकों और बुलेटिनों सहित अपने 390 से अधिक प्रकाशनों के माध्यम से, उन्होंने छात्रों, वैज्ञानिकों और किसानों के साथ अपना ज्ञान और जानकारी साझा की। पादप प्रजनन में उनकी आईसीएआर पुरस्कार विजेता पुस्तकें कृषि विश्वविद्यालयों में पाठ्य पुस्तक के रूप में पढ़ायी जाती हैं। उनके 244 शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। वर्तमान में वह कई विश्वविद्यालयों के सलाहकार बोर्ड में शामिल हैं। डीडीयू विश्वविद्यालय गोरखपुर ने उन्हें कृषि और प्राकृतिक विज्ञान संस्थान का संरक्षक बनाया है, और कृषि में शीर्ष स्नातकोत्तर विद्यार्थी के लिए उनके नाम पर "डॉ. राम चेत चौधरी स्वर्ण पदक'' की शुरुआत की है। वह 17 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक समितियों के सदस्य हैं।

5. प्रो. (डॉ.) चौधरी को भारत और दुनिया के अन्य देशों से 57 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पदक, पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्होंने चावल की 150 किस्में विकसित की हैं जिनकी खेती दुनिया भर में की जाती है। इनमें से 21 किस्मों की खेती भारत में की जाती है। उन्होंने विलुप्तप्राय कालानमक चावल पर अपने अनुसंधान और विकास के लिए पुरस्कार अर्जित किया है। यह विरासती चावल अब निर्यात किया जाता है और इससे किसानों की आय तीन गुना हो गई है। उन्होंने कालानमक चावल को भारत सरकार के पीपीवी और एफआरए के तहत पंजीकृत करके संरक्षित किया और उत्तर प्रदेश के 11 जिलों में 2030 तक भौगोलिक चिह्न (जीआई) भी प्राप्त किया। वह प्रमाणित जैविक कालानमक चावल के उत्पादन में किसानों को मदद भी कर रहे हैं।